श्री भूतनाथाष्टकं

पंचाक्षरप्रिय विरिंचादिपूजित परंज्योतिरूपभगवन्
पंचाद्रिवास शिखिपिंछावतंस जयवांछानुकूलवरद ।
पंचास्यवाह मणिकांची गुणांछित सुमंजीर मंजुलपद
पंचास्त्रकोटिरुचिरंजीकृतांग सुरसंजीवनप्रद विभो ॥1॥

लीलावतार मणिमालाकलाप शरशूलायुधोज्ज्वलकर
शैलाग्रवास मृगलीलामदालस कलाधीश चारुवदन ।
हालास्यनाथ पदलोलस्यपांड्यनरपालस्य बालवरद
श्रीलास्यदेवतरुमूलाधिवास जगदालंबपासयविभो ॥2॥

नृत्ताभिमोद निजभक्तानुमोद विलसत्तार केशवदन
सत्तापसार्चित समस्तांतरस्थित विशुद्धात्मबोधजनक ।
चित्ताभिरम्य जगदोद्धारशक्तिधर शार्दूलदुग्धहरण
मुग्धांगराग मणियुक्तप्रभारमण नित्यं नमोऽस्तु भगवन् ॥3॥

वेतालभूतगणनाथा विनोदसुरगीताभिमानचरिता
पातालनाकवसुधाधार पांड्यसुत चेतोविमोहनकर ।
वेदागमादिनुतपादादिकेश जगदाधार भूतशरण
वीतामयात्मसुखबोधा विभूतिधर नाथा नमोऽस्तुभगवन् ॥4॥

मंदारकुंदकुरुविंदारविंद सुमवृंदादिहार सुषम
वृंदारकेंद्रमुनिवृंदाभिवंद्यपदः वंदारुचिंतितकर ।
कंदर्प सुंदरसुगंधानुलेप भवसंतापशांतिदविभो
संतानदायक परंधाम पाहिसुरबंधो हरीशतनय ॥5॥

धाराधराभ मणिहारावलीवलय हीरांगदातिरुचिर
धीरावतंस घनसारादि भूतपरिवाराभिरम्यचरित ।
घोरारिमर्दन सदारामनर्तन विहार त्रिलोक शरण
ताराधिनाथमुख माराभिराम जय वीरासनस्थितविभो ॥6॥

ज्ञानाभिगम्य सुरगानाभिरम्य भवदीनावनैक निपुण
ज्ञानस्वरूप परमानंदचिन्मय जगन्नाथ भूतशरण ।
नानामृगेंद्रमृगयानंद पांड्यहृदयानंदनंदन विभो
सूनायुधांचितसमानांग पाहिसुरसेनासमूहभरण ॥7॥

वेदांतसार विबुधाद्धार वेत्रधर पादारविंद शरणं
भूताधिनाथ पुरुहूतादि पूजित किरातावतार शरणं ।
आधारभूत रिपुबाधाविमोचन सुराधारनाथ शरणं
नादांतरंग गुरुनाथानतार्त्तिहर गीताभिमोद शरणं ॥8॥

इति श्रीभूतनाथाष्टकं संपूर्णं ।